दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 23.08.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

धर्म ही मनुष्य की शक्ति है- प्रो. योगेन्द्र सिंह

गोरखपुर 23 अगस्त। 'धर्म का लोप करदेने से व्यक्ति स्वतः ही नष्ट हो जाता है। यदि व्यक्ति द्वारा धर्म की रक्षा की जाती है तभी व्यक्ति की रक्षा धर्म करता है। धर्म के सन्दर्भ में समुचित जानकारी के अभाव में कुछ लोग संकीर्ण परिभाषाएँ समझने और समझाने का दुष्प्रयास करते हैं। वास्तव में ये जो धर्म है अपने आप में अत्यन्त व्यापक और विशाल अर्थ को समेटे हुए है। धर्म ही इस चराचर जगत एवं सम्पूर्ण जीवों के जीवन का मूल है। धर्म के बिना इस सृष्टि और मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। क्योंकि धर्म के बिना ये सम्पूर्ण विश्व श्री हीन हो जायेगा, जिसमें न तो किसी प्राण शक्ति का वास होगा और न ही पुण्य विचारों का। महाभारत में भी धर्म का मतलब करते हुए कहा गया है कि **'धारणात् धर्म इत्याहु धर्मो धारयति प्रजाः'**।

धर्म ही मनुष्य की शक्ति है, धर्म ही शिक्षक है और धर्म ही परम मित्र है। भगवान मनु ने धैर्य, क्षमा, मन को जीतना, चोरी नहीं करना, वाक और मनसक्रिया, शरीर को शुद्ध रखना, इन्द्रियसंयम, बुद्धि, सत्य, विद्या, और शान्त इन दस लक्षणों को धर्म माना है। मनुस्मृति जैसे ग्रन्थ उस समय लिखे गये जब विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा आक्रमण करके भारतीय संस्कृति को छिन्न–भिन्न करने का प्रयास किया गया। भारतीय संस्कृति विश्व में श्रेष्ठतम संस्कृति है।

भारत के कई राज्यों में इसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण का शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से प्रयास सनातन धर्म के मर्म के सर्वथा विरूद्ध है।'' उक्त विचार युगपुरूष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं जयन्ति वर्ष एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन अवेद्य महाराज की जन्म शताब्दी वर्ष की पुण्य स्मृति पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित सप्तदिवसीय व्याख्यान माला के चौथे दिन **'धर्मो रक्षति रक्षतः'** विषय पर मुख्य वक्ता प्रो. योगेन्द्र सिंह, पूर्व कुलपति जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, सम्प्रति विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ वारणसी ने व्यक्त किया।

विद्वान वक्ता ने कहा कि भारत को प्राचीनतम वैभव सम्पन्न देश माना गया है। सनातन धर्म विश्वका प्राचीनतम धर्म है जिसके अनुयायी भारत, नेपाल और मारीशस आदि मे बहुसंख्यक हैं। छान्दोग्योपानिषद् में धर्म की तीन शाखाएँ बताई गयी है। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है 'सत्यम् वद धर्मं चर' इसी तथ्य को भगवद गीता में उल्लेखित किया गया है कि स्वधर्मे निधनं श्रेयः। प्रायः सभी धर्मों के मूल के रूप में सनातन धर्म को ही स्वीकारा गया है। गोरक्षपीठ के मन्दिर शिखर पर ध्येय वाक्य के रूप में धर्मो रक्षति रक्षितः का उल्लेख है और इसी के अनुरूप गोरक्षपीठ ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी से ले कर वर्तमान पीठाधीश्वर तक जनकल्याणार्थ सेवा के विभिन्न प्रकल्पों के साथ धर्म के प्रति दृढ़ संकल्प शक्ति परिलक्षित होती है। श्री राम जन्मभूमि आन्दोलन व पॉच अगस्त 2020 को मन्दिर शिलान्यास में यह प्रतिबद्धता व नेतृत्व स्पष्ट रूप में दिखायी देती है।

इस संगोष्ठी में संयोजक डॉ.राजशरण शाही सहित महाविद्यालय के सभी शिक्षक व अन्य जिज्ञासु उपस्थित रहे। संगोष्ठी का संचालन डॉ. अमरनाथ तिवारी, डॉ.सुभाष चन्द्र ने किया। प्रस्तावना और परिचय डॉ.रविन्द्र कुमार गंगवार ने किया। आभार ज्ञापन डॉ.धीरेन्द्र सिंह ने किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी,
सूचना एवं जनसम्पर्क